पाठ 07- मैं और मेरा देश (‘कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर')

प्रश्न-उत्तर

रचना से संवाद

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

प्रश्न 1. "एक दिन आनंद की इस दीवार में दरार पड़ गई", इस पंक्ति में रेखांकित शब्द 'दरार' किस ओर संकेत करता है?

(क) पूर्णता के भाव की तुष्टि

(ख) पारस्परिक संबंध टूटने की स्थिति

(ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार

(घ) सुख-सुविधाओं का अभाव

- **उपयुक्तता का तर्क:** लेखक पहले अपने घर, पड़ोस और नगर के सीमित दायरे में स्वयं को पूर्ण सुखी मान रहे थे। परंतु लाला लाजपत राय के परतंत्रता वाले अनुभव को सुनकर उनके इस व्यक्तिगत पूर्णता के भ्रम पर गहरा प्रहार हुआ, जिससे वह मानसिक दीवार टूट गई।

प्रश्न 2. निबंध में कहा गया है कि "ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है।" लेखक को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद की अनुभूति होती है?

(क) बात को विस्तार (अवसर) देने वाले प्रश्नों का

(ख) बात का निष्कर्ष प्रस्तुत करने वाले प्रश्नों का

(ग) बिना किसी संदर्भ के पूछे गए प्रश्नों का

(घ) किसी की समझ का आकलन करने वाले प्रश्नों का

- **उपयुक्तता का तर्क:** लेखक स्वयं स्पष्ट करते हैं कि जो प्रश्न विषय को आगे बढ़ाने, विचारों को 'खिलने' का और बात को नए तार्किक विस्तार देने का सही समय पर अवसर प्रदान करते हैं, उनके उत्तर में अपूर्व आनंद आता है।

प्रश्न 3. "अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए", इस वाक्य में पराधीनता के दिनों को दीन कहा गया है क्योंकि पराधीन भारत में—

(क) भोजन, आवास और वस्त्र जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था।

(ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।

(ग) महत्वपूर्ण निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी।

(घ) धार्मिक रीति-रिवाजों को मनाने पर रोक लगाई जाती थी।

- **उपयुक्तता का तर्क:** पराधीनता (गुलामी) का सबसे बड़ा कष्ट भौतिक अभाव नहीं, बल्कि मानसिक दासता है, जहाँ नागरिकों के मौलिक अधिकारों, उनके राष्ट्रीय गौरव और आत्मसम्मान को क्रूरतापूर्वक कुचला जाता है।

प्रश्न 4. निबंध के अनुसार मनुष्य साधन-संपन्न होते हुए भी गौरव का अनुभव नहीं कर सकते यदि—

(क) उन्हें विदेश भ्रमण के अवसर न मिलें।

(ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन (गुलाम) हो।

(ग) उनके नगर की शासन प्रणाली कमजोर हो।

(घ) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन होता हो।

- **उपयुक्तता का तर्क:** लाला लाजपत राय जी के अमेरिका-इंग्लैंड के संस्मरण से सिद्ध होता है कि यदि हमारा राष्ट्र स्वतंत्र और सम्मानित नहीं है, तो हमारे व्यक्तिगत साधन और डिग्रियाँ विश्व पटल पर मूल्यहीन हो जाती हैं।

प्रश्न 5. "पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है", इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'गाँठ' किन दो बातों को साथ बाँधती है?

(क) देश और नागरिक

(ख) देश pacesetter और संविधान

(ग) देश और विदेश

(घ) व्यवसाय और आजीविका

- **उपयुक्तता का तर्क:** जापान की दोनों कहानियाँ (फल भेंट करने वाला युवक और चित्र चुराने वाला छात्र) साफ़ दर्शाती हैं कि नागरिक का हर छोटा-बड़ा आचरण सीधे तौर पर उसके देश के गौरव या हीनता को अटूट रूप से आपस में बाँधता है।

प्रश्न 6. प्रस्तुत निबंध में मुख्यतः कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है?

(क) लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था

(ख) पारिवारिक संबंधों का महत्व

(ग) व्यक्ति और देश का अंतर्संबंध

(घ) देश का महत्व और व्यक्ति की उपेक्षा

- **उपयुक्तता का तर्क:** संपूर्ण निबंध इसी केंद्रीय विचार पर आधारित है कि व्यक्ति और राष्ट्र दो अलग चीज़ें नहीं हैं; दोनों का सम्मान, अधिकार और अस्तित्व पारस्परिक रूप से एक-दूसरे पर आश्रित है।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1. स्वामी रामतीर्थ फल देने वाले युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध क्यों हो गए?

- **उत्तर:** स्वामी रामतीर्थ उस जापानी युवक का उत्तर सुनकर इसलिए मुग्ध (प्रभावित) हो गए क्योंकि उस साधारण युवक के भीतर अपने देश के प्रति अगाध, निश्छल और सर्वोच्च **देशभक्ति व आत्मसम्मान का भाव** छिपा था। उसने फलों के बदले पैसे लेने के बजाय केवल यह मूल्य माँगा कि स्वामी जी अपने देश जाकर कभी यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। उस युवक का यह सोचना कि उसके देश की प्रतिष्ठा पर कोई बाहरी व्यक्ति उँगली न उठाए, उसकी उच्च राष्ट्रीय चेतना का प्रमाण था।

प्रश्न 2. जापान के युवक ने स्वामी रामतीर्थ को दिए गए फलों के मूल्य के रूप में क्या माँगा? आपके मन में उस युवक के व्यक्तित्व की कौन-सी छवि उभरती है, यह भी लिखिए।

- **उत्तर:** युवक ने फलों के मूल्य के रूप में माँगा— *"आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।"*
  - **उभरती हुई छवि:** इस घटना से हमारे मन में उस जापानी युवक की एक **जागरूक, निश्छल, स्वाभिमानी और सच्चे राष्ट्रभक्त नागरिक** की छवि उभरती है। वह कोई धनवान या प्रसिद्ध व्यक्ति नहीं था, परंतु अपने देश के 'सौंदर्यबोध' और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए वह अपनी ट्रेन छोड़ने और व्यक्तिगत श्रम करने को तत्पर था।

प्रश्न 3. "बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज तो हैं ही नहीं।" स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे क्या तर्क हो सकते हैं, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

- **उत्तर:** स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे निम्नलिखित अकाट्य तर्क और उदाहरण हैं:
  - **सांस्कृतिक और भौगोलिक तर्क:** हमारा शारीरिक और मानसिक विकास हमारे देश की मिट्टी, जल, वायु, ज्ञान-भंडार और सामाजिक परिवेश के सहारे ही होता है। हमारी व्यक्तिगत पहचान हमारे देश की राष्ट्रीय पहचान का ही विस्तार है।
  - **उदाहरण:** जैसे पुस्तकालय से चित्र चुराने वाला छात्र अकेला चोर था, परंतु उसका यह व्यक्तिगत कुकर्म पूरे देश के माथे पर कलंक लगा गया और पुस्तकालय के बाहर उसके पूरे देशवासियों के प्रवेश पर रोक लगा दी गई। इससे सिद्ध होता है कि नागरिक की हीनता देश की हीनता बनती है, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

<u>मेरे अनुभव मेरे विचार</u>

प्रश्न 1. "देश की हीनता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी हीनता और गौरव का फल भी उसके देश को मिलता है", अपने आस-पास के विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

- **उत्तर:** इस पंक्ति का भावार्थ यह है कि नागरिक का व्यक्तिगत आचरण सीधे राष्ट्र की प्रतिष्ठा तय करता है।
  - **आस-पास के उदाहरण:**
    1. **गौरव का उदाहरण:** जब हमारे देश के वैज्ञानिक (जैसे इसरो के वैज्ञानिक) कड़ी मेहनत करके चंद्रयान को चंद्रमा पर सफलतापूर्वक पहुँचाते हैं, तो उनके इस व्यक्तिगत पुरुषार्थ से पूरे विश्व में भारत का मस्तक गौरव से ऊँचा हो जाता है।
    2. **हीनता का उदाहरण:** जब कोई स्थानीय टैक्सी चालक या दुकानदार किसी विदेशी पर्यटक को अकेला देखकर उससे झूठ बोलता है या अधिक पैसे ठग लेता है, तो वह पर्यटक अपने देश जाकर पूरे भारत के नागरिकों को अविश्वसनीय मान लेता है, जिससे देश की छवि धूमिल होती है।

प्रश्न 2 (क). प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक आप अपने किन-किन कार्यों में किस-किसका क्या सहयोग लेते हैं और आप दूसरों को किस तरह का सहयोग देते हैं? अपने अनुभव लिखिए।

- **उत्तर: * सहयोग लेना:** सुबह उठने पर दूधवाले से दूध, सफ़ाई कर्मचारी द्वारा गली की सफ़ाई, अखबार वाले से समाचार पत्र, परिवहन चालक (बस ड्राइवर) द्वारा स्कूल पहुँचना और विद्यालय में शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करना।
    - **सहयोग देना:** मैं घर में अपनी माता जी के कार्यों में (जैसे पौधों में पानी देना, बाज़ार से सामान लाना) हाथ बंटाता हूँ। विद्यालय में अपने सहपाठियों को उनके छूटे हुए पाठ (Notes) देकर और गृहकार्य समझने में सहायता प्रदान करता हूँ।

प्रश्न 2 (ख). उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'बहुतों' में कौन-कौन सम्मिलित होंगे, अनुमान के आधार पर लिखिए।

- **उत्तर:** 'बहुतों' शब्द में हमारे समाज के वे तमाम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर्मवीर सम्मिलित हैं जिनके बिना हमारा दैनिक जीवन ठप हो सकता है; जैसे—**किसान, श्रमिक, सफाई कर्मचारी, डाकिया, शिक्षक, सैनिक, पुलिस, दुकानदार, बिजली-पानी के कर्मचारी और चिकित्सक**।

प्रश्न 2 (ग). रचनाकार को स्वयं के लिए दूसरे लोगों से किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता पड़ती होगी और वह दूसरों को किस प्रकार का सहयोग देता होगा, अनुमान के आधार पर लिखिए।

- **उत्तर:** रचनाकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी एक प्रसिद्ध पत्रकार और निबंधकार थे। उन्हें लिखने के लिए प्रिंटिंग प्रेस के कर्मचारियों, कागज़ निर्माताओं, डाकियों और अपने पाठकों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती थी। बदले में, वे अपनी ओजस्वी लेखनी, संस्मरणों और निबंधों के माध्यम से समाज को जगाने, राष्ट्रभक्ति की चेतना भरने और नैतिक मूल्यों का प्रसार करने का वैचारिक सहयोग देते थे।

प्रश्न 3 (क). "युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता" के आधार पर लिखिए कि देश की प्रगति, विकास एवं सुरक्षा के प्रति हम सभी के क्या-क्या दायित्व हैं?

- **उत्तर:** देश की प्रगति और सुरक्षा केवल सीमा पर खड़े सैनिकों का काम नहीं है। एक साधारण नागरिक के रूप में हमारे निम्नलिखित मुख्य दायित्व हैं:
    1. **ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन:** एक छात्र ईमानदारी से पढ़े, किसान अन्न उपजाए, डॉक्टर सही इलाज करे और सरकारी कर्मचारी बिना रिश्वत के काम करे—यही वास्तविक राष्ट्र सेवा है।
    2. **संसाधनों की सुरक्षा:** पानी, बिजली और सार्वजनिक संपत्तियों को व्यर्थ नष्ट न करना।
    3. **सकारात्मक आचरण:** देश की भीतरी दशा को समझकर कुरुचिपूर्ण आचरण (कूड़ा फेंकना, अपशब्द बोलना) से दूर रहना।

प्रश्न 3 (ख). अपने पास-पड़ोस में विचरने वाले पशु-पक्षियों की जीवनचर्या का अवलोकन कीजिए और अपने अवलोकन के आधार पर लिखिए कि आप उनके संघर्षों को किस रूप में देखते हैं?

- **उत्तर:** पशु-पक्षियों का जीवन भी साक्षात् एक अनवरत 'युद्ध' (संघर्ष) के समान है। सुबह होते ही पक्षी अपने घोंसलों से दाने की खोज में निकल पड़ते हैं। कड़कती धूप, मूसलाधार बारिश और कड़े जाड़े में भी उन्हें अपने भोजन और आश्रय के लिए संघर्ष करना पड़ता है। शहरीकरण के कारण जब पेड़ कट रहे हैं, तो गौरैया और कौवे जैसे पक्षियों को घोंसला बनाने के लिए तिनके तक नहीं मिलते। 'दो बैलों की कथा' के हीरा-मोती की तरह ही हमारे आस-पास के आवारा पशु भी इंसानों की क्रूरता, भूख और गाड़ियों की दुर्घटनाओं से रोज़ अपनी जान बचाने का कड़ा संघर्ष करते हैं।

प्रश्न 3 (ग). इस निबंध में जीवन को युद्ध क्यों कहा गया है? अपने घर के बड़ों से चर्चा करके उनके और अपने विचार लिखिए।

- **उत्तर:** जीवन को 'युद्ध' इसलिए कहा गया है क्योंकि यहाँ पग-पग पर विपरीत परिस्थितियों, मानसिक द्वंद्वों, कठिनाइयों और अभावों से लड़ना पड़ता है।
  - **बड़ों के विचार:** मेरे दादा जी के अनुसार, जीवन में जैसे एक सैनिक हर पल सजग रहता है, वैसे ही मनुष्य को अपनी आजीविका चलाने, परिवार की रक्षा करने और समाज में नैतिक मूल्यों को बचाए रखने के लिए प्रतिदिन संघर्ष करना पड़ता है। जो इस संघर्ष से डरकर भाग जाता है, वह जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है।

प्रश्न 3 (घ). देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा सैनिक करते हैं। इसी तरह हमारे आस-पास हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए अनेक लोग कार्यरत हैं। ये कौन-कौन लोग हैं और उनके लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?

- **उत्तर:** ये लोग हैं—**सफाई कर्मचारी, ट्रैफिक पुलिस, फायर ब्रिगेड के जवान, रात के चैकीदार और कूड़ा बीनने वाले बच्चे।**
  - **हम उनके लिए क्या कर सकते हैं:**
    - सफाई कर्मचारियों के आदर के लिए हम सड़कों पर कचरा न फेंककर उनके काम को आसान बना सकते हैं।
    - कड़कती धूप में खड़े ट्रैफिक पुलिसकर्मियों को पीने का साफ पानी या छाछ भेंट कर सकते हैं।
    - उत्सवों के समय इन श्रमवीरों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्हें मिठाई या उपहार दे सकते हैं।

प्रश्न 4 (क). "अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।" उपर्युक्त पंक्ति के आधार पर लिखिए कि पास-पड़ोस के लोगों में किस तरह के पारस्परिक संबंध रहे होंगे?

- **उत्तर:** इस पंक्ति से स्पष्ट है कि पुराने समय में पास-पड़ोस के संबंध अत्यधिक **मधुर, आत्मीय, पारिवारिक और आदर से भरे** होते थे। पड़ोसियों के बीच कोई परायापन नहीं होता था; एक घर का बच्चा पूरे मोहल्ले का

बच्चा माना जाता था, जिसे हर पड़ोसी से ममता, दुलार और संरक्षण मिलता था। सुख-दुख में पूरा पड़ोस एक साथ खड़ा रहता था।

प्रश्न 4 (ख). वर्तमान समय में ऐसे संबंधों में किस तरह के परिवर्तन आए हैं और इनके क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।

- **उत्तर:** * **परिवर्तन:** वर्तमान समय में पड़ोसियों के बीच वह पुराना आत्मीय जुड़ाव समाप्त हो रहा है। लोग अब एक ही बहुमंजिला इमारत (फ्लैट) में आमने-सामने रहकर भी एक-दूसरे का नाम तक नहीं जानते। संबंधों में औपचारिकता, अकेलापन और अजनबीपन बढ़ गया है।
  - **परिवर्तन के मुख्य कारण:**
    1. **तकनीक का अत्यधिक प्रभाव:** लोग खाली समय में पड़ोसियों से बात करने के बजाय मोबाइल, सोशल मीडिया और टीवी में व्यस्त रहते हैं।
    2. **आधुनिक आपाधापी व व्यस्तता:** रोज़गार की होड़ में लोगों के पास समय का सर्वथा अभाव है।
    3. **अत्यधिक निजता (Privacy) की चाह:** आधुनिक संस्कृति में लोग दूसरों का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते।

प्रश्न 5. "क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?" अपने घर/विद्यालय के आस-पास, सार्वजनिक संसाधनों और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की स्वच्छता एवं सौंदर्य को बनाए रखने के लिए आप और आपके सहपाठी, संबंधी क्या-क्या करते हैं?

- **उत्तर:** हम और हमारे सहपाठी सौंदर्य-बोध को बनाए रखने के लिए निम्नलिखित व्यावहारिक प्रयास करते हैं:
  - **विद्यालय में:** हम 'ग्रीन क्लब' के माध्यम से प्रत्येक शनिवार को कक्षा और मैदान की सफ़ाई करते हैं, सूखे व गीले कचरे को अलग-अलग डस्टबिन में डालते हैं।
  - **ऐतिहासिक स्थानों पर:** जब हम किसी प्राचीन किले या स्मारक (जैसे ताजमहल या लाल किला) के भ्रमण पर जाते हैं, तो हम वहाँ की दीवारों पर चाक या पेन से अपना नाम या कोई स्क्रैच नहीं लिखते, और दूसरों को भी ऐसा कुरुचिपूर्ण आचरण करने से रोकते हैं।
  - **घर के पास:** हम केला या अन्य फल खाकर छिलका हमेशा डस्टबिन में ही डालते हैं, रास्ते पर पीक नहीं थूकते।

प्रश्न 6. "मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे।" देश के सम्मान को धक्का न पहुँचे, इसके लिए क्या करें और क्या नहीं करें?

- **उत्तर:**
- **क्या करें (Do's):**
  - हमेशा मतदान (चुनाव) के समय सही और योग्य उम्मीदवार को ही अपना मत दें।

    - विदेशी पर्यटकों और अतिथियों के साथ अत्यंत आदर, ईमानदारी और "अतिथि देवो भव" का व्यवहार करें।
    - अपने राष्ट्रीय प्रतीकों (ध्वज, राष्ट्रगान) और सार्वजनिक संपत्तियों का सदैव सम्मान करें।
- **क्या न करें (Don'ts):**
    - विदेशों में या इंटरनेट पर सार्वजनिक मंचों पर अपने देश की भीतरी कमियों का मज़ाक उड़ाकर उसके 'शक्तिबोध' को ठेस न पहुँचाएँ।
    - ऐतिहासिक स्मारकों पर गंदगी न फैलाएं और न ही उनकी दीवारों को गंदा करें।
    - उत्तेजक या गलत नारों के प्रभाव में आकर अपना मत (वोट) कभी न बेचें।

मेरे प्रश्न (उत्तरों से प्रश्न निर्माण)

दिए गए गद्यांश के आलोक में निर्मित तीन प्रामाणिक प्रश्न निम्नलिखित हैं:

- **प्रश्न 1 (योगदान पर):** क्या देश की सुरक्षा, प्रगति और ऐश्वर्य के विकास में केवल आर्थिक रूप से संपन्न व्यक्ति ही योगदान दे सकते हैं या सभी नागरिकों की भूमिका होती है?
- **प्रश्न 2 (छवि पर):** एक नागरिक के रूप में हमारे द्वारा किए गए किसी भी गलत कार्य का हमारी व्यक्तिगत छवि के अतिरिक्त हमारे देश की छवि पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- **प्रश्न 3 (प्रतिनिधित्व पर):** "हम सब नागरिक अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं"—इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि नागरिक और देश का अंतर्संबंध कैसा है?

विधा से संवाद: निबंध की विशेषताएँ

1. 'मैं और मेरा देश' निबंध से खोजे गए साहित्यिक तत्वों के उदाहरण:

- **विषय-केंद्रीयता:** पूरा निबंध व्यक्ति और राष्ट्र के अटूट संबंध के इर्द-गिर्द ही घूमता है।
- **तार्किकता:** लेखक ने जापान के दो युवकों और शल्य के उदाहरण द्वारा अपनी बात को पूरी तरह तार्किक रूप से पुष्ट किया है।
- **प्रेरणात्मकता:** कमालपाशा और नेहरू जी की कहानियाँ पाठकों के मन में देश के प्रति गहरी 'भावना' और आदर का संचार करती हैं।
- **संक्षिप्तता और स्पष्टता:** शक्तिबोध और सौंदर्यबोध की परिभाषाएँ अत्यंत कम और स्पष्ट शब्दों में समझाई गई हैं।

2. प्रश्नोत्तर / संवादात्मक शैली की विशेषताएँ

- **उत्तर:** इस निबंध की सबसे बड़ी विशेषता इसकी **आत्मपरक और संवादात्मक प्रश्नोत्तर शैली** है। लेखक बीच-बीच में पाठक की ओर से स्वयं प्रश्न पूछते हैं— *"क्या कोई भूकंप आया था?"* या *"युद्ध में जय बोलने वालों का?"* और फिर स्वयं ही उसका अत्यंत सजीव उत्तर देते हैं। यह शैली शुष्क गद्य को एक जीवंत बातचीत (संवाद) में बदल देती है, जिससे पाठक की जिज्ञासा आदि से अंत तक बनी रहती है।

3. निबंध लेखन हेतु विषयों का चयन (कारण सहित)

- **चयनित विषय: मेरा भारत मेरा गौरव**
  - **कारण:** मैं इस विषय पर निबंध लिखना चाहूँगा क्योंकि यह सीधे इस पाठ के मूल भाव 'सौंदर्यबोध' और 'शक्तिबोध' से जुड़ता है। इसमें मुझे भारत की प्राचीन वैज्ञानिक धरोहर, उसकी सांस्कृतिक विविधता और आधुनिक आत्मनिर्भरता (जैसे स्पेस टेक) को तार्किक और भावनात्मक रूप से पिरोने का विस्तृत अवसर मिलेगा।

विषयों से संवाद: चुनाव एवं आपके अनुभव

प्रश्न 1. जब कोई चुनाव प्रक्रिया आपके क्षेत्र में शुरू होती है तो किस तरह की गतिविधियाँ होती हैं?

- **उत्तर:** चुनाव प्रक्रिया शुरू होते ही पूरे क्षेत्र का वातावरण अत्यधिक उत्तेजक और राजनीतिक हो जाता है। सड़कों और खंभों पर विभिन्न उम्मीदवारों के रंग-बिरंगे होर्डिंग्स, पोस्टर और बैनर टंग जाते हैं। लाउडस्पीकर लगे वाहनों से प्रचार के नारे गूँजते हैं। जगह-जगह नुक्कड़ सभाएँ और रैलियाँ आयोजित होती हैं, जहाँ नेता जनता को रिझाने के लिए भाषण और घोषणापत्र बाँटते हैं। घर-घर जाकर मतदाता पर्चियाँ बांटी जाती हैं और 'वोटर सेल्फ़ी पॉइंट' जैसे जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं।

प्रश्न 2. "जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मनुष्य को अपना मत दें", आपके विचार से एक अच्छे उम्मीदवार में क्या-क्या गुण होने चाहिए?

- **उत्तर:** एक अच्छे और योग्य उम्मीदवार में निम्नलिखित मुख्य गुण होने चाहिए:
  1. **ईमानदारी और बेदाग चरित्र:** उसका कोई आपराधिक इतिहास नहीं होना चाहिए, वह भ्रष्टाचार से दूर हो।
  2. **उच्च शिक्षित और जागरूक:** उसे क्षेत्र की भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं की गहरी समझ होनी चाहिए।
  3. **संवेदनशील और सुलभ:** वह केवल चुनाव के समय नहीं, बल्कि हर सुख-दुख में आम नागरिकों के लिए आसानी से उपलब्ध हो।
  4. **दूरदर्शी:** वह उत्तेजक या भड़काऊ नारे लगाने के बजाय क्षेत्र के वास्तविक विकास (शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण) के मुद्दों पर बात करे।

प्रश्न 3. चुनाव से जुड़ा अपना कोई अनुभव लिखिए (कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव)।

- **उत्तर:** पिछले महीने हमारी कक्षा में 'क्लास मॉनिटर' (कक्षा प्रतिनिधि) का चुनाव हुआ था। हमारे वर्ग शिक्षक ने निष्पक्ष मतपेटी (बैलेट बॉक्स) की व्यवस्था की थी। कक्षा के दो छात्र उम्मीदवार थे। एक छात्र चॉकलेट और उपहार का लालच देकर वोट माँग रहा था, जबकि दूसरा छात्र (रोहन) पढ़ाई में कमज़ोर बच्चों को एक्स्ट्रा टाइम देने और कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के वास्तविक मुद्दों पर बात कर रही था। मैंने कन्हैयालाल मिश्र जी के इस पाठ की कसौटी को याद रखा और उत्तेजक लालच में न आकर 'ठीक मनुष्य'

रोहन को अपना गुप्त मत दिया। रोहन भारी मतों से जीता और आज हमारी कक्षा विद्यालय में सर्वश्रेष्ठ अनुशासित कक्षा मानी जाती है।

प्रश्न 4. यदि आप किसी सभा, क्लब आदि के चुनाव में उम्मीदवार हों तो आपके क्या-क्या मुद्दे होंगे?

- **उत्तर:** यदि मैं अपने विद्यालय के 'पर्यावरण और सांस्कृतिक क्लब' के चुनाव में उम्मीदवार बनूँ, तो मेरे निम्नलिखित मुख्य मुद्दे होंगे:
    - **शून्य प्लास्टिक अभियान:** विद्यालय परिसर को पूरी तरह सिंगल-यूज़ प्लास्टिक मुक्त बनाना।
    - **भाषाई आदर मंच:** हर क्षेत्र और भाषा के छात्रों के सम्मान के लिए प्रतिवर्ष 'भाषा-संगम उत्सव' का आयोजन करना।
    - **पुस्तकालय का आधुनिकीकरण:** दृष्टिबाधित सहपाठियों के लिए ब्रेल लिपि की पुस्तकें मँगवाना।

<u>व्यावहारिक सृजन</u>

(क) हमारा पुस्तकालय (नियम और सामाजिक चेतना)

- **पुस्तकों के फटने या पृष्ठ गायब होने के कारण:** कुछ असामाजिक या संकीर्ण मानसिकता वाले छात्र दुर्लभ चित्रों या महत्वपूर्ण नोट्स को अपने स्वार्थ के लिए पुस्तक से फाड़ लेते हैं, या पढ़ते समय पेन/पेंसिल से उस पर निशान लगा देते हैं। यह राष्ट्रीय 'सौंदर्यबोध' और सार्वजनिक संपत्ति के प्रति घोर संवेदनहीनता का प्रतीक है।
- **रोकथाम के उपाय:** पुस्तकालय में सीसीटीवी (CCTV) कैमरों की निगरानी बढ़ाई जाए। पुस्तक जारी (Issue) करते समय और वापस लेते समय पेजों की कड़ाई से जाँच हो। नियमों का उल्लंघन करने वाले पर कड़ा आर्थिक दंड और पुस्तकालय प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाए।
- **अनिवार्य नियम:** पुस्तकालय के भीतर पूर्ण शांति बनाए रखना, पढ़ते समय किसी भी पन्ने पर पेन न चलाना और पुस्तक को नियत समय पर वापस करना अनिवार्य है ताकि अन्य सहपाठी भी उसका लाभ उठा सकें।

(ख) प्रधानाध्यापक को ब्रेल लिपि में पुस्तकें मँगवाने हेतु पत्र

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय,
भारतीय विद्या भवन, दिल्ली।
विषय: विद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय में दृष्टिबाधित छात्रों हेतु ब्रेल लिपि में पुस्तकें मँगवाने के संदर्भ में।
महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपकी कक्षा ९वीं का छात्र हूँ। मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान हमारे विद्यालय के उन विशेष आवश्यकता वाले (दृष्टिबाधित) सहपाठियों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जो अगाध कुशाग्र बुद्धि होने के बावजूद केवल सामान्य प्रिंट की पुस्तकें होने के कारण पुस्तकालय के ज्ञान-भंडार का स्वयं आनंद उठाने में असमर्थ हैं।

भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों और समानता के सिद्धांत के अनुसार, हमारे इन दिव्यांग मित्रों को भी शिक्षा के समान साधन प्राप्त होने चाहिए। ब्रेल लिपि में ज्ञान-विज्ञान, महान संस्मरणों और कहानियों की पुस्तकें उपलब्ध होने से वे भी आत्मनिर्भर होकर अपनी साक्षरता और वैचारिक चेतना को सुदृढ़ कर सकेंगे।
अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आगामी शैक्षणिक सत्र के बजट में हमारे पुस्तकालय के लिए ब्रेल लिपि वाली विशेष पुस्तकों और ऑडियो-बुक्स (Audio Books) की व्यवस्था कराने की कृपा करें।
आपका आज्ञाकारी शिष्य,
कक्षा - ९वीं (अ)

(ग) राष्ट्र निर्माण के कर्मवीरों हेतु 'कृतज्ञता ज्ञापन' (Gratitude Note)

कृतज्ञता ज्ञापन: राष्ट्र के सजग प्रहरियों को नमन

*हम भारत के समस्त नागरिक, अपने महान राष्ट्र की सीमाओं पर शून्य से नीचे के तापमान में मुस्तैदी से तैनात वीर सैनिकों (जैसे फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों) और देश के भीतर अहोरात्र कार्यरत कर्मवीरों के प्रति अपना सर्वोच्च आदर और कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।
हम नमन करते हैं उस **किसान** को जो खेतों में पसीना बहाकर देश के लिए रसद (अन्न) उपजाता है; उस **श्रमिक** को जो कारखानों और बुनियादी ढाँचे का निर्माण करता है; उस **वैज्ञानिक** को जो अपने अनुसंधानों से देश के शक्तिबोध को बढ़ाता है; उस **अध्यापक** को जो नई पीढ़ी में ज्ञान और सही संस्कारों का बीजारोपण करता है; और उस **सफाई कर्मचारी** को जो हमारे सौंदर्यबोध की रक्षा करता है। आप सभी का छोटा से छोटा कार्य भी इस राष्ट्र की प्रगति की नींव है। आपके इस अमूल्य और अनवरत पुरुषार्थ के लिए यह संपूर्ण देश आपका ऋणी है। धन्यवाद!*

(घ) चुनाव में योग्य उम्मीदवार चुनने हेतु आकर्षक 'विज्ञापन'

==

🗳️ 【 जागरूक नागरिक, मजबूत लोकतंत्र 】 🗳️

==

" गलत प्रभाव और उत्तेजक नारों से ना हो गुमराह,
ठीक मनुष्य को अपना मत देकर चुनें सही राह! "

👉 **क्या आपका उम्मीदवार:**
✅ उच्च शिक्षित, बेदाग और ईमानदार है?
✅ क्षेत्र की बेकारी और वास्तविक समस्याओं से वाकिफ है?
✅ सुरुचि, सौंदर्यबोध और विकास का समर्थक है?

📌 **याद रखें:**
मत देना आपका परम कर्तव्य है, योग्य को चुनना आपका सर्वोच्च अधिकार!
२५ मई को शत-प्रतिशत मतदान करें। कोई मतदाता न छूटे!

==

भाषा से संवाद: व्याकरण खंड

(क) संदर्भ के अनुसार शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थों की पहचान

चयनित शब्द	संदर्भ 1 (भौतिक / प्रत्यक्ष अर्थ)	संदर्भ 2 (भावनात्मक / लाक्षणिक अर्थ)
दरार	भूकंप आने से भवन की पक्की ईंटों की **दीवार में दरार** पड़ गई।	गलतफ़हमी और कुरुचिपूर्ण आचरण के कारण दो मित्रों के **संबंधों में दरार** आ गई।
गाँठ	माला गूँथते समय धागे के अंतिम सिरे पर एक मजबूत **गाँठ** बाँध दीजिए।	यह वह अदृश्य **वैचारिक गाँठ** है जो एक आम नागरिक के आचरण को उसके देश के गौरव से सीधे बाँधती है।
पानी	कड़कती धूप में प्यास लगने पर मल्लाह ने मुझे शीतल **पानी** दिया।	पुस्तकालय से दुर्लभ चित्र चुराने की चोरी पकड़े जाने पर विदेशी छात्र शर्म के मारे **पानी-पानी हो गया**।

(ख) उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय का कड़ा वर्गीकरण तालिका

सामासिक / व्याकरणिक शब्द	**उपसर्ग (Prefix)**	**मूल शब्द (Root Word)**	**प्रत्यय (Suffix)**
अपूर्णता	*अ*	*पूर्ण*	*ता*
अलौकिक	अ	लोक / लौकिक	इक
निरक्षरता	निर्	अक्षर	ता
सम्मानित	सम्	मान	इत
अनावश्यक	अन्	आवश्यक	-
अपमानित	अप	मान	इत
अभिमानी	अभि	मान	ई

Links और References

इस निबंध और पूरक शौर्य पाठ के वैचारिक आयामों को प्रामाणिक रूप से समझने के लिए डिजिटल संदर्भ कड़ियाँ नीचे दी गई हैं:

- 🔗 **भारत सरकार का आधिकारिक शिक्षा शब्दावली संदर्भ:** https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp — 'शक्तिबोध', 'सौंदर्यबोध' और 'मज्मून' जैसे विशिष्ट शब्दों की प्रांतीय भाषाई तुलना हेतु।
- 🔗 **लाला लाजपत राय के ऐतिहासिक भाषण एवं विचार संग्रह:** https://haryanarajbhavan.gov.in/hi/publication/ — राजभवन द्वारा जारी लालाजी के 'आत्मनिर्भरता' और 'अधिकारों की रक्षा' संबंधी मूल संदेश।

- 🔗 **प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB) - स्वतंत्रता सेनानी संदर्भ आलेख:** https://www.pib.gov.in — भारत सरकार द्वारा महान देशभक्तों और परमवीर चक्र विजेताओं के जीवन पर जारी प्रामाणिक विवरण।